ISSN - 2455-6696

Impact Factor-1.522 (Iijif)

अनुसंधान शताब्दी

अर्ध्दवार्षिक आंतरराष्ट्रीय हिंदी ई शोध पत्रिका

जुलाई से दिसंबर 2016

प्रधान संपादक - डॉ.बळीराम राख

संपादक - प्रा.राजश्री तावरे

‘अनुसंधान शताब्दी ’आंतरराष्ट्रीय हिंदी ई-शोध पत्रिका

जुलाई से दिसंबर 2016 Issue - II, vol- I

ISSN : 2455-6696

Impact Factor-1.522 (Iijif)

अनुक्रमणिका

1	डॉ. सुभाष राठोड	रमणिका गुप्ता की कविताओं में नारी विमर्श	1-6
2	प्रा.डॉ. खाकरे पी.आर	मनुष्य की दे[redacted]में रसोईघर का ‘रसायन विज्ञान’	7-13
3	प्रा.डॉ.अर्चना परदेशी -	कबीर : समाज सुधारक	14-17
4	डॉ.आनंदकुमार यादव	प्रेमचंद के साहित्य का अनुशिलन डॉ.रामविलास शर्मा	18-22
5	प्रा. कृष्णा कदम -	आधुनिक हिंदी रंगमंच और नाटक	23-29
6	प्रा.डॉ. मधुकर क्षीरसागर	संत तुलसीदास कृत श्री हनुमान चालिसा : एक अध्ययन	30-37
7.	डॉ.ललिता राठोड	हिंदी साहित्य में अकेलापन	38-40

‘अनुसंधान शतABDी ’आंतरराष्ट्रीय हिंदी ई-शोध पत्रिका

जुलाई से दिसंबर 2016 Issue - II, vol- I

ISSN : 2455-6696

Impact Factor-1.522 (Iijif)

Page no : 38-40

हिंदी साहित्य में अकेलापन

डॉ.ललिता राठोड

भीड़ तन्हाईयों का मेला है

आदमी आदमी अकेला है।(सबा अकबराबादी)

आज के वैश्वीकरण के चौखट पर पैर रखते प्रत[illegible] और बच्चों के कदम तेज होने लगते हैं। पता नहीं वे कौन-से दौड में है, एक दूसरे के साथ होते हुए भी पूरी तरह अ[illegible] अनभिज्ञता `अकेलेपन` को और अधिक गहरा बना देती हैं। यहां यह नहीं कहती कि वैश्विकरण के कारण ही आज मनुष्य `अकेलेपन` से जूझ रहा है। परंतु कुछ हद तक प्रभावित तो हुआ है। इसलिए निदा फाजली कहते हैं -

Anusandhan Shatabdi

``एक महफिल में कई महफिले होती है शरीक

जिसको भी पास से देखोगे अकेला होगा।``

अकेलापन वह बीमारी है, जिसे कोई इतनी आसानी से पहचान नहीं पाता। प्रतियोगितावाले दिमाग में कहीं-न-कहीं उस सकून और शांति की चाह होती है , परंतु उस दिमाग के तनाव का या फिर उदासीनता का पूरी तरह से विरेचन नहीं होता बल्कि वह दिनों-दिन बढ़ता चला जाता है। फिर विभिन्न मानसिक रोगों के चपेट में आ जाता है। मानसिक रोगियों के आंकड़े दिन-ब-दिन बढ़ते नज़र आ रहे हैं। यह वही अकेलापन है जो इन मानसिक रोगों को और अधिक बढ़ाता है। मानसिक रोगियों के आंकड़े दिन-ब-दिन बढ़ते नज़र आ रहे हैं। यह वहीं अकेलापन है जो इन मानसिक रोगों को और अधिक बढ़ाता है। नेशनल काइम रिकार्ड ब्यूरो के आंकडों के अनुसार - ``2015 में 133623 आत्महत्याओं को दर्ज किया गया, अर्थात् दूसरे राज्यों के आंकड़ों के अनुसार 14.2% महाराष्ट में आत्महत्याओं की संख्या है।`` अकेलेपन की स्थिति आगे चलकर मनुष्य को मृत्यु की ओर धकेल देती है मनुष्य के मन में मृत्यु की भावना बढ़ जाती है, जीवन दुश्वर हो जाता है। स्पष्ट है कि दिन-ब-दिन आत्महत्याओं की घटनाओं में बढ़ोतरी हो रही है। इन सब के पीछे कहीं-न-कहीं वह अकेला की भावना काम करती है। यह सही नहीं `झुंड` में रहे परंतु अकेले रहना एक स्थिति है, जिससे हम विकास कर सकते हैं, परंतु अकेलापन ऐसी भावावस्था है, जो मनुष्य को अंदर से तोड़ देती है। इसलिए आवश्यक है कि लोगों ने `अकेलेपन` की अवस्था से निकलकर जीवन को सही दिशा दे जो स्वयं को भी उर्जस्वित करें और औरों को भी आनंदित ।